International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 4; July 2018; Page No. 35-38

इलाहाबाद जिले में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का अध्ययन

विजय शंकर यादव [1], डॉ० डी० एस० सिंह बघेल [2]

[1] शोध छात्र, विभाग शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, विभाग शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र इलाहाबाद जिले में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का अध्ययन पर आधारित है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं का मध्यमान माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं के मध्यमान से अधिक है और इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र छात्राओं में मानसिक सजगता माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। इसका प्रमुख कारण यह हो सकता है कि कक्षा शिक्षण के दौरान अंग्रेजी माध्यम के शिक्षक हिन्दी माध्यम के शिक्षक की तुलना में आधुनिक शिक्षण विधियों, गृहकार्य एवं कक्षा कार्य पर अधिक बल दिया जाता है, तथा जिससे अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी जाती है।

मूल शब्द : इलाहाबाद जिला, माध्यमिक विद्यालय, मानसिक सजगता।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन तथा परिमार्जन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। बालक जब इस संसार में आता है तो वह बोलना, चलना, हँसना, खेलना इत्यादि क्रियाएँ अपने माता–पिता द्वारा या परिवार में सीखता है। वह बालक परिवार से विद्यालय में प्रवेश करता है तो वहाँसे नवीन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करने हेतु वह अनुकरण का सहारा लेता है। विद्यालय में वह पढ़ता लिखता है, सामाजिक आचरण, अच्छी आदतें आदि को सीखता है। सीखने की यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है और सीखने की प्रक्रिया द्वारा अपने व्यवहार में परिमार्जन एवं परिवर्तन करता जाता है। किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सोद्देश्य प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है।

शिक्षा एक सजीव एवं गतिशील प्रक्रिया है इसमें शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य अन्तःक्रिया होती रहती है और सम्पूर्ण अन्तःक्रिया किसी लक्ष्य की ओर उन्मुख होती है, परन्तु शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में छात्र–छात्राओं का अधिक क्रियाशील होना आवश्यक है। छात्र किसी भी राष्ट्र के भविष्य निर्माता और आधार स्तम्भ होते हैं। किसी भी राष्ट्र का भविष्य वहाँ के बच्चों की शिक्षा–दीक्षा एवं उनके सर्वांगींण विकास पर निर्भर करता है। बालकों के सर्वांगींण विकास के लिए अच्छी एवं उपयोगी शिक्षा की अहम् भूमिका होती है। आवश्यक एवं उपयोगी शिक्षा के अभाव में उनके समुचित विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि प्राचीन समय से लेकर आज तक शिक्षा में बहुत से प्रयोग किये जा रहे हैं जिससे कि हम अपने बालकों को अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रदान करके उनके योगदान को राष्ट्रीय विकास में जोड़ सके। इन्हीं प्रयोगों में से बहुत से प्रयोग जैसे–शिक्षा का माध्यम, उनका विषयों के प्रति रुचि का आकलन, उनके मनोवैज्ञानिक गुण इत्यादि के अनुसार शिक्षा की संख्या का निर्माण करना है। हालॉकि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक अंग्रेजी शिक्षा पर व्यापक बल दिया जा रहा है इसका कारण यह है कि भविष्य में छात्र–छात्राओं के सर्वांगींण विकास एवं समाज तथा राष्ट्र की प्रगति अंग्रेजी ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता के मन में जिज्ञासा हुई कि माध्यमिक स्तर के विभिन्न विषय वर्गों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता एवं तार्किक योग्यता का क्या प्रभाव पड़ता है? अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई। वर्तमान समय में छात्र–छात्राओं के माता–पिता तथा अभिभावक अपने पाल्यों को अच्छा से अच्छा ज्ञान प्रदान करने के लिए बहुत से तरीके अपनाने लगे हैं। इसमें एक तरीका अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में शिक्षा प्रदान करने का भी है। हमें आजकल यह दिखायी भी पड़ रहा है कि जहाँ हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में छात्र संख्या घटती जा रही है वहीं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में छात्र संख्या में तीव्र वृद्धि दृष्टिगोचर हो रही है। जहाँ तक शोधकर्ता का विचार है इसका कारण यह है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों की विषय के प्रति रुचि, अच्छा पाठ्यक्रम, अनुशासन, पाठ्यसहगामी क्रियाकलाप, अतिरिक्त क्रियायें इत्यादि छात्र संख्या की बढोत्तरी में महत्वपूर्ण कारक हैं और इन्हीं कारकों के द्वारा छात्र–छात्राओं का सर्वांगींण विकास किया जा सकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता इस तथ्य का पता लगाने की कोशिश किया है कि आज के छात्र एवं उनके अभिभावक अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के लिए लालायित हैं तथा इस माध्यम के मार्ग की अंधी दौड़ में सरपट दौड़े जा रहे हैं। शोधकर्ता का यह विचार है कि वर्तमान समय के इस प्रतिस्पर्धात्मक दौर में आगे बढ़ने के लिए अंग्रेजी भाषा एवं अंग्रेजी माध्यम को अपनाना आवश्यक हो गया है, ऐसी अवधारणा है कि अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं हिन्दी माध्यम की उपेक्षा करके स्वयं का सर्वांगींण विकास नहीं किया जा सकता है।

वर्तमान समय में शिक्षाविदों की यह धारणा है कि वे बालक शिक्षा में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिक प्रगति करते हैं, जिनमें मानसिक सजगता अधिक पायी जाती है। अंग्रेजी और हिन्दी माध्यम के छात्रों में मानसिक सजगता के सन्दर्भ में एक समान अवधारणा नहीं है। सामान्य अवधारणा यह है कि अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राएँ हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं से अधिक सजग एवं योग्य पाये जाते हैं जबकि मानसिक सजगता का सम्बन्ध किसी भाषा विशेष से नहीं है। अध्ययन अध्यापन की भाषा का माध्यम एक नियोजित शिक्षा एवं विकास की दिशा देती है। कहीं हिन्दी माध्यम के संस्थाओं का नियोजन एवं व्यवस्थापन अंग्रेजी माध्यम की अपेक्षा अनुचित तो नहीं है जिसके कारण मानसिक सजगता प्रभावित होती है। इस अवधारणा को यथार्थ पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए इस विषय पर शोध करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

3. शोध की परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम और हिन्दी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता ज्ञात करना।
- माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम और हिन्दी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता की स्थिति ज्ञात करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र इलाहाबाद जिला है। अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 तथा केन्द्रीय शिक्षा परिषद से मान्यता माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में कक्षा–11 तथा कक्षा 12 की सभी विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

समष्टि व प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के कक्षा–11 एवं कक्षा–12 के कुल 800 छात्रों पर किया गया है जिसमें हिन्दी माध्यम के 400 छात्र/छात्राएँ एवं 400 अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्रायें होंगी। हिन्दी माध्यम के 400 छात्र–छात्राओं में 200 ग्रामीण तथा 200 शहरी क्षेत्र तथा इसी प्रकार अंग्रेजी माध्यम के 400 छात्र–छात्राओं में 200 ग्रामीण तथा 200 शहरी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व होगा। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में डॉ0 आर0पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत सामान्य मानसिक सजगता परीक्षण_का प्रयोग किया गया है जिसमें न्यादर्श के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का मापन किया गया है। इस परीक्षण पुस्तिका में कुल 100 प्रश्न रखे गये हैं। सभी प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं तथा इन प्रश्नों में गणितीय तर्कशक्ति, परिभाषा सम्बन्धी, अंकीय ग्रंथमाला तथा समानार्थी विलोमार्थी जैसे योग्यता की परख वाले प्रश्नों को रखा गया है। इन प्रश्नों के द्वारा छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता जैसे– सतर्कता, शीघ्र क्रिया के लिए तैयार रहना, सक्रियता प्रत्येक क्षण समान भाव इत्यादि का परीक्षण किया जायेगा।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, रीना (2007)[1], गुप्ता एस.पी. (2001)[2], मेहता, सी. (1970)[3], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[4], पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[5], पाण्डेय, आर.एस. (1997)[6], पाठक, पी.डी (2007)[7], राज्य शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशिक्षण संस्थान (2002)[8], राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (1998)[9] ने शोध विधि एवं छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. इलाहाबाद जिले का सामान्य परिचय

इलाहाबाद उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित एक नगर एवं इलाहाबाद जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है। इसका प्राचीन नाम प्रयाग है। इसे 'तीर्थराज' (तीर्थो का राजा) भी कहते हैं। इलाहाबाद भारत का दूसरा प्राचीनतम बसा नगर है। इलाहाबाद की भौगोलिक स्थिति 25.45°N व 81.84°E उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में 98 मीटर (322 फीट) पर गंगा और यमुना नदियों के संगम पर स्थित है। यह क्षेत्र प्राचीन वत्स देश कहलाता था। इसके दक्षिण–पूर्व में बुंदेलखण्ड क्षेत्र है, उत्तर एवं उत्तर–पूर्व में अवध क्षेत्र एवं इसके पश्चिम में निचला दोआब क्षेत्र। इलाहाबाद भौगोलिक एवं

सांस्कृतिक दृष्टि, दोनों से ही महत्वपूर्ण रहा है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1: माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का अध्ययन

समूह		माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्रायें	माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम क छात्र–छात्रायें
समूह की संख्या (N)		400	400
मध्यमान (M)		57.67	65.50
मानक विचलन (D)		9.04	5.41
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		14.77	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

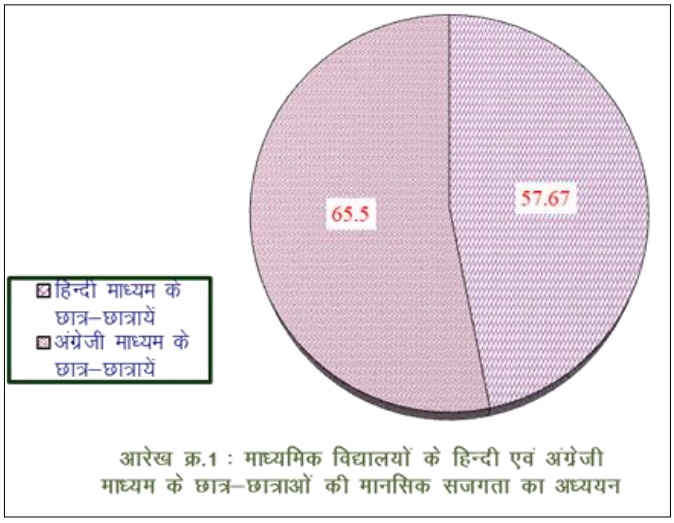

आरेख क्र.1 : माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 57.67 तथा 65.50 तथा मानक विचलन क्रमशः 9. 04 तथा 5.41 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 14.77 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः मानसिक सजगता के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः उपरोक्त के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं का मध्यमान माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं के मध्यमान से अधिक है और इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के छात्र छात्राओं में मानसिक सजगता माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यम के छात्र छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। इसके कई कारण हो सकते हैं। एक तो अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में टेस्ट के द्वारा अच्छे छात्र–छात्राओं का प्रवेश लिया जाता है। दूसरे अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में शिक्षक परिश्रम एवं जिम्मेदारी के साथ अच्छा शिक्षण कार्य करते हैं। तीसरे अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में मासिक/त्रैमासिक परीक्षा भी हुआ करती है जिससे वे शिक्षा के प्रति लापरवाही नहीं करते। इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के छात्र छात्राओं के मानसिक सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

परिकल्पना क्र. 2: माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम और हिन्दी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 2: माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम और हिन्दी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का अध्ययन

समूह		माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कलावर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्रायें	माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यम क कलावर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्रायें
समूह की संख्या (N)		400	400
मध्यमान (M)		65.50	57.67
मानक विचलन (SD)		5.41	9.04
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		14.77	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारिणी में माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम और हिन्दी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता में सार्थक अन्तर ज्ञात किया गया। दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 65.50 तथा 57.67 प्राप्त हुआ। जबकि मानक विचलन क्रमशः 5.41 तथा 9.04 प्राप्त हुआ। सार्थकता के लिए (C.R. Test) की गणना की गयी जिसका मान 14.77 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है इससे यह पता चलता है कि दोनों समूहों में सार्थक अन्तर विद्यमान है।

अतः उपरोक्त के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं का मध्यमान माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के मध्यमान से अधिक है और इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र छात्राओं में मानसिक सजगता माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। इसका प्रमुख

कारण यह हो सकता है कि कक्षा शिक्षण के दौरान अंग्रेजी माध्यम के शिक्षक हिन्दी माध्यम के शिक्षक की तुलना में आधुनिक शिक्षण विधियों, गृहकार्य एवं कक्षा कार्य पर अधिक बल दिया जाता है, तथा जिससे अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पनाः ''माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम एवं हिन्दी माध्यम के छात्र छात्राओं के कलावर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकार की जाती है।
अतः परिकल्पना निरसित होती है।

निष्कर्ष

माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। शोधकर्ता ने पाया कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता में सार्थक अन्तर प्राप्त होता है। इसका कारण अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय, उनमें नियुक्त शिक्षक तथा शिक्षण विधियाँ का प्रभावी होना है जिसके कारण अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता, हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं से अधिक पायी गयीं। प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के कारण प्रायः यह देखा जाता है कि अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं का बौद्धिक स्तर एवं मानसिक सजगता विकसित अवस्था में पायी जाती है।
माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी और हिन्दी माध्यम के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता में सार्थकता का अध्ययन किय गया तथा यह पाया कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता में सार्थक अन्तर दृष्टिगोचर होता है। अध्ययन में यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का औसत (M), हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता के औसत से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता हिन्दी माध्यम के छात्र छात्राओं की मानसिक सजगता से अधिक होती है। इसका कारण अंग्रेजी माध्यम की प्रभावी विधियाँ तथा अनुप्रयोगी पाठ्यक्रम है।

सन्दर्भ सूचि

1. अग्रवाल, रीना परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
2. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
3. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
4. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
5. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
6. पाण्डेय, आर.एस. – 'एजूकेशन एस्टर डे एण्ड टुडे' (एक विश्लेषण) हॉरिजन पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 1997.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
8. राज्य शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशिक्षण संस्थान – ''अभिनव'' शैक्षिक प्रबन्धन पत्रिका, सीमेट, एलनगंज, इलाहाबाद, 2002.
9. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद – शैक्षिक प्रेक्षक (समाचार), उ0प्र0 सभी के लिए शिक्षा परियोजना, निशातगंज, लखनऊ, 1998.